कालिदास की रस योजना Contd.

विप्रलम्भ शृंगार - विप्रलम्भ (वियोग) शृंगार के बिना संभोग शृंगार की पुष्टि नहीं होती - 'न विना विप्रलम्भेन सम्भोगः पुष्टिमश्नुते' पुष्टिमर्हति'।

अभिज्ञान शाकुन्तलम् के तृतीय अंक में राजा जब शकुन्तला को शीघ्र ही अपनी राजधानी में बुलाने का वचन देकर चला गया, तभी से विप्रलम्भ का प्रारंभ हो जाता है। इसी प्रकार चतुर्थ, पंचम और षष्ठ अंक सर्वथा विप्रलम्भ की परिपोषक सामग्री से भरपूर है। इस बीच में अन्य रसों का वर्णन इसके पोषक रसों के रूप में संयोजित है। कतिपय स्थलों पर इनका चित्रण देखने योग्य है - यथा - 'चित्ते निवेश्य परिकल्पितसत्त्वयोगा' तथा 'न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।' 'न विद्मो मदनेन न च संवृतः।'

यद्यपि आचार्य भरत ने 'अष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः' सिद्धान्त की स्थापना करके शृंगार आदि रसों का ही सन्निवेश अभिनेय रसों में किया गया है।

अभिज्ञान-शाकुन्तल के चतुर्थ अंक में शकुन्तला के प्रस्थान-प्रसंग को लेकर कुछ विद्वानों ने करुण रस की सत्ता स्वीकारी है, क्योंकि आचार्य भवभूति के मत में प्रधान अथवा मूलभूत रस 'करुण' ही है और उसी के भेद-प्रभेद अन्य रस है। इस धारणा के अनुसार जो भी विद्वानों को रुचिकर प्रतीत हो किन्तु इस अंक की कथावस्तु 'वात्सल्य विप्रलम्भ' का चित्रण कर रही है। इस भावना की पुष्टि के लिए कतिपय प्रमाण प्रस्तुत किए जा रहे हैं। करुण रस का स्थायी भाव 'शोक' है।

Scanned with CamScanner

इसके विपरीत यहाँ शकुन्तला की विदाई के लिए प्रस्थान-कौतुक की तैयारियाँ की जा रही हैं, इसके लिए कालिदास ने 'मंगलसमालम्भन' शब्द का प्रयोग किया है। इसके पश्चात् शकुन्तला को दिए जानेवाले आशीर्वाद इस प्रकार हैं – 'वीरप्रसविनी भव', 'भर्तुर्बहुमता भव' आदि। रोती हुई शकुन्तला को इन शब्दों से मना किया जाता है – 'ननु उचितं मंगलकाले रोदितुम्।'

महर्षि कण्व इस तथ्य से परिचित हैं कि 'अर्थोहि कन्या परकीय एव' अर्थात् कन्या पिता का धन नहीं अपितु वह पति का धन है। मीमांसा शास्त्र के अनुसार भी कन्यादान के समय पढ़े जाने वाले संकल्प में 'ॐ तत्सत्' तो कहा जाता है, किन्तु 'न मम' नहीं कहा जाता है, क्योंकि कन्या के साथ माता-पिता का ममत्व संबंध तो रहता ही है, अतः ऐसे में 'शोक' नामक स्थायी भाव को अवसर नहीं मिलता, इसलिए सचमुच वह ~~विप्रलम्भता~~ 'वत्सलता' का विप्रलम्भ ही है और वह भी कन्या के प्रथम वियोग के समय अधिक और शेष अवसरों पर कम होता जाता है। जब शकुन्तला महर्षि कण्व से पूछती है – मैं इस आश्रम में पुनः कब आऊँगी? उत्तरस्वरूप मुनि कण्व कहते हैं – 'शान्त्यै करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्' अर्थात् वृद्धावस्था में गृह-प्रपंचों को छोड़कर परमपद की प्राप्ति के लिए पुनः इस आश्रम में अपने पति के साथ आकर निवास करोगी।'

Uma Pathak
Dept.-of SKt.
B.A. II (continued)